International Journal of Applied Research 2023; 9(5): 71-73

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 71-73
www.allresearchjournal.com
Received: 02-02-2023
Accepted: 06-03-2023

प्रिया सिंह
संस्कृत, डॉ. राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, सम्बद्ध–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रिया सिंह
संस्कृत, डॉ. राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, सम्बद्ध–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

मेघदूत में काव्यसौन्दर्य बोध

प्रिया सिंह

सारांश
संस्कृत गीति का काव्य का मुकुट मणि कहा जाता है। मेघदूत और मेघदूत एक ऐसा मणि है, जो हमेशा सहृदयों के हृदय को समय के प्रवाह के संघर्षण से आलोकित करता है। कालिदास ने मेघदूत काव्य में भावों की गरिमा, कल्पना की ऊँची उड़ान, प्रकृति का मानव हृदय पर प्रभाव, विचारों की महिमा, भाषा की मधुसा, अनुभूतियों की संवेदनशीलता एवं रस, छनद, अलंकारों की लावण्यमयी रूप को प्रस्तुत किया है। काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से मेघदूत कालिदास की श्रेष्ठ रचना है। मेघदूत में काव्य सौन्दर्य की सारी विशेषताएं प्राप्त होती हैं।

कूटशब्दः मेघदूत, काव्य सौन्दर्य, भावों की गरिमा

प्रस्तावना
मेघदूत संस्कृत गीतिकाव्य का कीर्तिमान स्तम्भ है जो सर्वदा आलोकमय होता हुआ। सहृदयों के हृदय को आनन्दित करता रहता है। वह दिन भी कितना शुभकारी रहा होगा जिस दिन महकवि कालिदास जो मेघदूत जैसे अमरकृति काव्य की रचना की।
मेघदूत काव्य कृति में काव्य सौन्दर्य की अनुपम छटा विखरी हुई है। मेघदूत जैसे खण्डकाव्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि यह काव्य काव्यसौन्दर्य की दृष्टि से एक पूर्ण काव्य है। जिसका उदाहरण अन्य काव्यों में मिलना दुर्लभ है।
मेघदूत काव्य में कल्पना की ऊँची उड़ान विचारों की महानता भावों की गरिमा, कवि की कला, प्रकृति का मानव जीवन पर प्रभाव हृदयभावों की आँखों के सामने अंकित करना, भाषा की मधुरता एकत्व छन्द की रचना, अनुभूतियों की संवेदनशीलता, नयी नवेली दुल्हन की लावण्यमयी रुप की प्रस्तुती इत्यादि काव्य सौन्दर्य से परिपूर्ण है।
मेघदूत की भाषा संगीतमय श्लोक युक्त माधुर्य प्रसाद गुणों से समन्वित है। इस काव्य में विरही हृदय की झंकार गुँजती रहती है। मेघदूत की भाषा शुद्ध सरल परिकृत, प्राजल एवं प्रवाह की धार से ओतप्रोत है। शब्दावली का चयन प्रसग्ड के अनुसार ही हुआ है। शब्दों का अर्थ भी भावाभिव्यक्ति में परिपूर्ण है। इसका उदाहरण एक पद्य में है कि दृ
मेघरुपी बादल जब अलकानगरी की दिशा की ओर बढ़ता है उस समय वायु मन्द मन्द गति से प्रेरित करती है, गर्व से परिपूर्ण पपीहा बाग भाग की दिशा की तरफ मधुर शब्द कर रहा है। और बालाकायें अपने आँखों को आनन्दित कर रही है।[1]
माधुर्य की व्यञ्जक मधुर पदावली का प्रयोग मधुर भावों अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। मेघदूत में सुकुमारता का व्यजंन कोमलकान्त पदावली से युक्त एवं मेघदूत में कही–कही शब्दों की नकारात्मक ध्वनि से वर्णित विषय का चित्र उपस्थित हो जाता है।[2] इस काव्य की भाषा सदस्यों के छुआ को आप्लावित करने के लिए भावों के स्त्रोत को निर्वाह गति से बहाता है। एवं तादात्म्य की अनुभूति करते है।
मेघदूत की रचना से पता चलता है कि महकवि कालिदास ने भाषा पर पूर्ण अधिकार का श्रेय प्राप्त कर लिया था। उनकी भाषा में सरलता सरसता, परिष्कृता, प्रान्जलता, मनोरमता कुट कुट कर भरा पड़ा था। और प्रसाद गुण में तो प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति में अग्रणी माने जाते है। उनके काव्यों में छोटे–छोटे समास का प्रयोग दिखाई देता है। क्योंकि उन्होंने कभी भी पाडिण्त्य प्रदर्शन की इच्छा नहीं जाहिर की। मेघदूत के श्लोक मे देखा जा सकता है।[4]
महाकवि कालिदास ने अपने काव्य में शब्द अर्थ का पूर्ण सामंजस्य वर्णित किया है। शब्दों का प्रयोग कब कहाँ और किस जगह करना है। यह उनको भलि भाँति ज्ञात था। इसका उदाहरण कुमार सम्भव के पञ्चम स्वर्ग में देखा जा सकता है।[5]

कालिदास जी की रचनाओं में शब्दों की सरलता के साथ–साथ भावों की गम्भीरता भी देखी जाती है। इसका सुन्दर उदाहरण कालिदास ने मेघदूत में गम्भीरता नदी में नायिका का आरोप करते हुए कहते हैं कि "हे मित्र बेल की शाखा तक पहुँचे हुए हाथ से कुछ पकड़े गये के समान तटरुप नितम्ब को छोड़ने वाले, नील वर्ण युक्त गम्भीरा नदी के जल रुप वस्त्र को हटाकर ठहरे हुए तुम्हारा प्रस्थान बड़ी कठिनता से होगा क्योंकि स्वाद को जानने वाला कौन सा पुरुष खुली जांघ वाली स्त्री को छोड़ने में समर्थ होगा।[6]

कवि ने जिस भाव को जिस स्थान–स्थान पर प्रयोग करना चाहिए उसी स्थान पर उस भाव को स्थापित किया है। कवि के पास शब्दों का अगाध भाण्डार है। कालिदास के सवाद योजना सरल सूक्ष्म एवं आकर्षक है। संवादों की भाषा मधुर आकर्षक रोचक एवं सजीव है। कवि ने छोटे–छोटे वाक्यों में सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त किया है। कवि ने पात्रो के अनुसार ही भाषा का प्रयोग किया है। कवि की रचनाओं में उच्च श्रेणी के लोग संस्कृत भाषा का प्रयोग करते है। निम्न श्रेणी के लोग प्राकृत भाषा का प्रयोग करते है। महाकवि कालिदास अदभूत वैशिष्टय के कवि है। कालिदास का विश्व साहित्य में उनकी भाषा शैली का विशेष योगदान है। उनके काव्यों का कथावस्तु संजीव एवं आकर्षक है।

कालिदास के काव्यों में उत्कृष्ट कला साधना पद पद पर दिखाई देती है। कालिदास को वैदभी का श्रेष्ठ कवि माना जाता है। उनके काव्यों में प्रसाद गुण की अधिकता पाई जाती है। क्योंकि प्रसाद गुण का होना ही वैदभी शैली की विशेषता है। इन्ही शैली और गुणों की वजह से कालिदास जी को कविकुलगुरु शिरोमणि कालिदास कहा जाता है। कालिदास ने अपने काव्यों में व्यन्जना शक्ति का आश्रय लिया है।

रसों पर ध्यान दिया जाय तो कवि ने अपनी रचनाओं श्रृंगार रस को ज्यादा महत्व दिया है। वैसे कवि ने बाकी सभी रसों को अपने काव्यों में स्थान दिया है। कालिदास के काव्यों में भाषा शैली सुसगंठित सक्षिप्त, मसृण, गांभीर्य, सुस्निग्ध औदार्य, गद्य का परिष्ककृत सशक्त एवं प्रांजल सौन्दर्य और पदावली की निश्चित अर्थवन्ता से युक्त रंग एवं माधुर्य छलकता रहता है।

महाकवि कालिदास श्रृंगार रस के वर्णन में अग्रणीय स्थान रखते है। उन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षों का सुन्दर वर्णन अपने काव्यो में किया है। संयोग श्रृंगार का वर्णन एवं वियोग श्रृंगार का वर्णन करने कवि अत्यन्त सफल कवि है। संयोग श्रृंगार की मधुरिम मादकता का वर्णन कवि अपनी रचना "कुमारसम्भवम् महाकाव्य" के अष्टम् सर्ग में विवाहोपरान्त नव समागम् के प्रसंग में किया है।[6]

महाकवि कालिदास ने संयोग श्रृंगार का वर्णन अपनी रचना मेघदूत में करते हुए कहते है। "गम्भीरा रुपी नायिका अपने चंचल चितवन के साथ मेघ रुपी नायक से मिलती है। तो भला वह उस नायिका को कैसे छोड़ सकता है।[7]

श्रृंगार रस के अतिरिक्त कवि करुण रस वीर रस शान्त रस हास्य रस आदि रसों का भी वर्णन अपने काव्यों में किया है। रघुवंश महाकाव्यम् में प्रायः सभी रसों का वर्णन किया गया है। रति विलाप एवं अजविलाप करुण रस का सबसे अच्छे उदाहरण है। इसमें कवि करुण रस धारा वहा दिये है। क्योंकि जब इन्दुमती का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाता है। और अज राजा जब बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ते है तो वहा उपस्थित सेवकों के रुदन से उपवन के पक्षी उद्विग्न होकर इस प्रकार रुदन करने लगते है। जिसकों देखकर ऐसा लगता है। मानों वे पढ़नी समूह भी अपनी संवेदना प्रकट कर रहे हों।

दूसरा करुण रस का उदाहरण रति विलाप में देखने को मिलता है। जिसमें कामदेव के भष्म हो जाने पर रति विलाप करती हुई कहती है। कि स्त्रियों का अपना धर्म है कि वे पति के साथ चिता में जलकर उनका अनुगमन करे क्योंकि जब अचेतनों को यह धर्म दिखाई देता है। तो फिर वह तो चेतन है।

वीर रस और हास्य रस की रचना में भी कवी कालिदास निपुण कवि कहे जाते है। कुमार सम्भवम् हास्य रस की रचना का सबसे सुन्दर उदाहरण है।

कालिदास जी ने मेघदूत में सरल एवं सुकुमा चित्र रसों के प्रयोग में चतुर चित्रकार का काम किया है। कालिदास सभी रसों का प्रयोग करने में कुशल है। यह एक सराहनीय एवं प्रंशसनीय कार्य है। फिर भी कालिदास जी श्रृंगार रस एवं करुण रसों के प्रयोग में अति उत्तम माने जाते है।

काव्य की रचना छन्द विधान का बहुत महत्व है। कालिदास ने कुछ निश्चित प्रसंगों के लिए कुछ निश्चित छन्दों का प्रयोग किया है। इस आधार पर यह ज्ञात होता है कि विशेष भावों और रसों के लिए कुछ विशेष छन्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए उदाहरण के लिए वियोग श्रृंगार के वर्णन एवं वष्यऋन्ज के वर्णन में मन्द्राक्रान्ता छन्द का प्रयोग किया जाना चाहिए वीरस के वर्णन में वंशस्य छन्द का प्रयोग करना चाहिए कार्य में सफलता पर वसन्ततिलका छन्दका प्रयोग करना चाहिए।

कालिदास की रचना से यह ज्ञात होता है। उनकों छोटे–छोटे छन्द अधिक प्रिय थे। किन्तु यह नहीं कह सकते है। कि बड़े छन्दों का भी प्रयोग अपने काव्यों में किये है।

महाकवि कालिदास ने मेघदूत का सम्पूर्ण श्लोक की रचना मन्दाकान्ता छन्द में किया है। वर्षा ऋतु एवं प्रवास के वर्णन में उन्होनें मन्दाक्रान्ता छन्द का सहारा लिया है।

ऋतु संहार की रचना में वसन्त तिलका उपजाति एवं मालिनी छन्द का प्रयोग किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक में कवि ने रसों के अनुसार छन्दों का प्रयोग किया है। किन्तु ज्यादातर अभिज्ञान शाकुन्तलम् में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया है रघुवंश महाकाव्यमे एवं कमार सम्भवम् में कालिदास ने उपजाति अनुष्टुप वंशस्थ एंव मालिनी छन्द के प्रयोग का सहारा लिया है।

महाकवि कालिदास ने अलंकारों का प्रयोग बहुत ही ज्यादातर किया है। अलंकारों में भी शब्दालंकार से ज्यादा अर्थालंकार का प्रयोग किया है। कवि ने शब्दालकांर का प्रयोग बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया है कवि का अलंकारों का प्रयोग से सहज सौन्दर्य से चित्रों को आकृष्ट करने वाली है। कवि ने अपने काव्यों में अनुप्रास मयक श्लोक अंलकारो का प्रयोग बनाने के लिए कवि सादृश्य मूल अलंकार का विधान किया है। सादृश्य मूल अलंकारों में उपमा का सर्वप्रमुख स्थान है।

महाकवि कालिदास ने अलंकारों का प्रयोग कर अपनी चतुराई का परिचय दिया है। कालिदास जी ने अपने काव्यों में अलंकारो का प्रयोग अथवा स्थान किया है। अर्थात जहाँ जिस अलंकार की आवश्यकता है वहाँ उसी अलंकार का प्रयोग किया है। किसी भी अलंकार को जबरदस्ती कही पर प्रयोग नहीं किया है। यमक र श्लेष अलंकार का प्रयोग कवि ने अपने काव्यों में कम ही प्रयोग किया कवि की रचनाओं में कही–कही यमक् और श्लेष का प्रयोग देखने को मिलता है। यमंक अलंकार के प्रयोग का उदाहरण कवि की रचना रघुवंश महाकाव्यम् के नवम सर्ग में दशरथ की राज व्यवस्था वसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु का वर्णन एवं आखेट वर्णन में देखा जा सकता है।

सादृश्यमूलक अलंकार के प्रयोग में उपमा सर्वप्रमुख है। उपमा अलंकार के ज्ञान से अन्य सादृश्यमूलक अंलकारों का ज्ञान बहुत ही सहज रुप से हो जाता है। कालिदास के काव्यों में उपमा अलंकार और अर्थान्तर न्यास अलंकार प्रयोग ज्यादा देखने को मिलता है।

संस्कृत साहित्य के जगत में उपमा अलंकार के प्रयोग में कालिदास जी अग्रणी एवं ज्ञानी माने जाते है। कालिदास जी के काव्यों में उपमा अलंकार के सौन्दर्य एवं प्रयोग को खकर समीक्षको ने उन्हें उपमा कालिदास की संज्ञा से सम्बोधित करने

लगे रघुवंश महाकाव्यम् के छठे सर्ग में इन्दुमती की समानता जलती हुई दीपशिखा से की गयी है।[1]
और दीपशिखा की यह उपमा इंतनी प्रसिद्ध हुई कि उसने कालिदास को दीपशिखा ही बना दिया।
कवि की उपमा रस सौन्दर्य एवं भाव अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है। अर्थान्तर न्यास अलंकार के प्रयोग में भी कवि महारथ हासिल है। उनका अर्थान्तर न्यास तो उपमा से भी अधिक प्रंशसनीय है। उपमा और अर्थान्तर न्यास के प्रयोग में एक श्लोक प्रंशता में कवि को कहा गया है।[2]
उपमा और अर्थात न्यास अलंकारों के अतिरिक्त अन्य अलकारों का भी प्रयोग कवि ने किया है। जैसे निदर्शना, स्वभावोक्ति, रुपक, व्यक्तिरेक, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति, आदि। कवि की शुरुआती रचनाओं में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग कम देखने को मिलता है। लेकिन बाद वाली रचना जैसे मेघदूतम् इत्यादि में तो कवि में उत्पेक्षा अलंकार के प्रयोग की.....
मेघदूत में कालिदास की काव्य कला
1– भाषा और शैली – महाकवि कालिदास की काव्य सौन्दर्य तो प्रायः सभी कृतियों में स्पृहणीय एवं मनोहरि रुप में दिखाई देती है। किन्तु मेघदूत काव्य की कला सौन्दर्य विकास की चरम को प्राप्त कर चुकी है। मेघदूत की काव्य कला जितनी सुकुमार एवं रमणीय है उतनी ही इस काव्य की भाषा एवं शैली भी मनोहर है। मेघदूत काव्य की भाषा शब्द परिष्कृत, प्राञ्जल एवं प्रवाह पूर्ण है। इस काव्य में शब्दों के चयन में कवि ने विशे, कौशल को प्रकट किया है। कवि ने इस काव्य में माधुरी व्यञ्जन मधुर शब्दावली एवं पदावली का प्रयोग किया है। सुकुमार व्यञ्जन कोमल कान्त पदावली का प्रयोग बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। इस ग्रन्थ में नादात्मक ध्वनि से वर्णित चिता भी दर्शाया गया है।[1]
मेघदूतम् की भाषा प्रसाद एंव माधुर्य गुणों से सम्बन्धित एवं संगीतपरक है। इस काव्य में विरही यक्ष के हृदय की झकार झकृ त होती हैं। मेघदूत की भाषा में परिष्कृटता प्राञ्जलता एवं प्रवाह पूर्णता के भाव सर्वत्र सुशोभित होने है। प्रसङगानुसार शब्दों का चयन किया गयै है कि अर्थ भी भावों की अभिव्यक्ति से सम्पूर्ण होता है। मेघ जब अलका नगरी दिया की ओर मुड़ता है उस समय वायु उसे मन्द–मन्द रुप से प्रेरित करती है। गर्व से पूर्ण पपीहा वाम भाग से होकर मधुर आवाज करता है। और वहाँ की बालाकायें नयनों को आनन्दित करती है।[2]
मेघदूत काव्य में माधुर्य युक्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए मधुर पदावली एवं शब्दावली का प्रयोग किये गया है। नादात्मकता ध्वनि से युक्त शब्द ही विय का चित्र प्रस्तुत करते है। जैसे "यक्ष मेघ से कहता है कि हे मित्र मेघ तुम उज्जयिनी में महाकाल के मन्दिर मे सायंकालीन पहुँचकर शिव के सायंकालीन पूजा में तुम्हारा मेघ गर्जन प्रंशसनीय नगाड़े के काम को करते हुए कुछ गभी को अखण्ड रुस सफल बना देगा।ङ
कालिदास ने मेघदूत की ऐसी भाषा को दर्शाया है जिसमें भाषा भावों के स्त्रोतों को निर्वाध गति बहाता हुआ सहृदय के हृदय को आप्लावित करता है। जिससे वे तादात्मन्य की अनुभूति करते है। रास्ते में पड़ी हुई मेघ रुप वादल की प्रेमिका निर्विन्ध्या नदी के हाव–भाव को देखकर कवि कहता है कि स्त्रियों के हाव–भाव ही प्रेमाभिव्यक्ति के प्रथम वाक्य होते है। इस का उदाहरण आप मेघदूत के इस श्लोक में देख सकते है। जिसमें यक्ष मेघ से कहता है कि दृ
"हे मित्र मेघ मार्ग में तरड़ो के चलने से शब्द करते हुए पक्षी समूह रुपी करधनी को धारण करने वाली, पत्थरों पर गिरने से मनोहरता पूर्वक बहने वाली भव नाभि को प्रदर्शित करने वाली निर्विन्ध्या नाम की नदी के सम्पर्क में आकर उसके रस को ग्रहण करने में अतरङः बनो क्यों कि स्त्रियों के प्रेमी जनों के प्रति श्रृंगार चेष्टा की प्रथम प्रणय याचना हुआ करती है।"[4]
कवि ने मेघदूत में जगह–जगह पर भावों और दृश्यों के सुन्दर शब्द चित्र प्रस्तुत किये है। इस काव्य में रुप विधान अत्यधिक प्रभावी एवं सुन्दर बना हुआ है। उज्जयिनी अत्यन्त सुन्दर बिम्बग्राही चित्र वर्णित किया गया है।
कालिदास जी उज्जयिनी के विशाल की विशेषता का वर्णन करते हुए कहते है। कि "जिस के करोड़ों बाजारों में सजाये गये शुद्ध हारों के मध्य के गुँथे जाने वाले महारत्नों को मोतियों की मालाओं के शब्दों और सीपियों को घास के समान हरित वर्ण अ.डकुरों के समान उपर उठती हुई किरणों से चमकती हुई मरकत मणियों को मूँगों के टुकड़ों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों रत्नाकरों में केवल जल मोढ़ा अवशिष्ट रह गया है।"[5]
व्यग्य प्रधान मेघदूत नामक खण्डकाव्य वैदभी, शैली से युक्त काव्य रत्न माना जाता है। इस काव्य में संगीतात्मक युक्त भाषा साथ ही साथ प्रेमियों को मिलन बहुत ही सुन्दर एवं अभिराम चित्रण किया गया है। वियोग विधुरा यक्ष एवं उसकी प्रेयसी यक्षिणी की एक समान अवस्था का चित्रण करते हुए कवि कहते है। कि दोनों की अत्यन्त कृशता को प्राप्त है, और दोनों ही सन्ताप, साश्रु, उत्कण्ठित और दीर्घ उच्छवास युक्त है। इनका मानसिक संकल्पनाओं वाले मधुर मिलन की बात है।
मेघदूत की भाषा एवं शैली अत्यन्त रमणीय एव मनोहर है। इस काव्य में कवि ने शब्दों के चयन में विशेष कौशल को प्रकट किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पूर्व मेघ श्लोक संख्या– 9
2. पूर्व मेघ श्लोक संख्या – 34
3. मेघदूतम् – पूर्वमेघ
4. कुमार सम्भवम् पञ्चम सर्ग
5. मेघदूतम् पूर्वमेघ 41 वाँ श्लोक
6. कुमार सम्भवम् अष्टम् सर्ग
7. मेघदूतम् पूर्व मेघ
8. रघुवंश महाकाव्यम् 6 वाँ सग